हिंदी

बालभारती

चौथी कक्षा

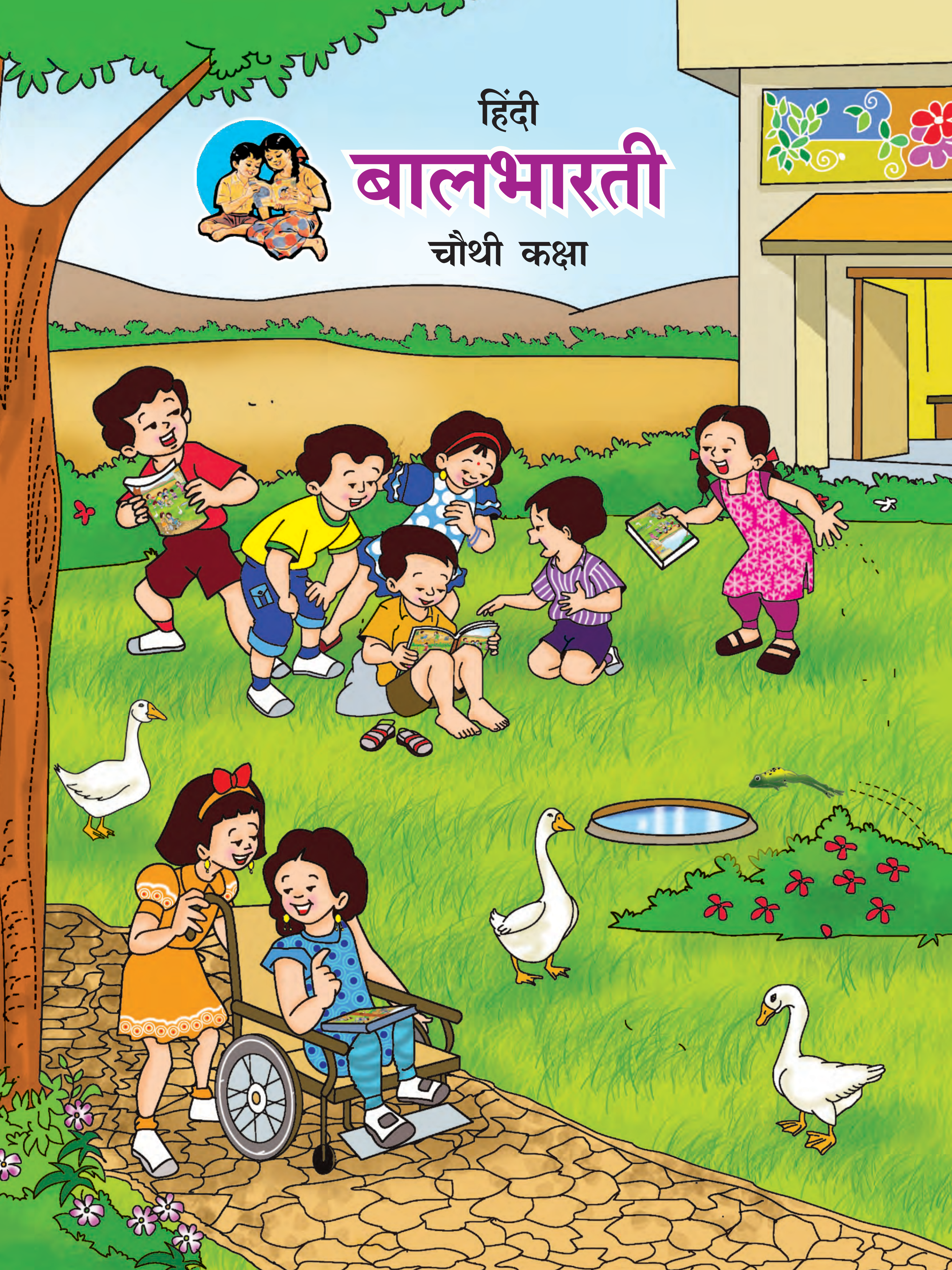

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं /२०१४-१५/६४५७/ मंजूरी/ ड-५०५/ २४४१ दिनांक :- २४/०४/२०१४

हिंदी
बालभारती
चौथी कक्षा

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्‌वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‌यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

मेरा नाम ---------- है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१४
सातवाँ पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे, अध्यक्ष
डॉ. हेमचंद्र वैद्‌य, सदस्य
डॉ. साधना शाह, सदस्य
प्रा. मुल्ला मैनोद्‌दीन, सदस्य
श्री रामहित यादव, सदस्य
श्री कौशल पांडेय, सदस्य
श्री रामनयन दुबे, सदस्य
डॉ. अलका पोतदार, सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी
डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
श्री संजय भारद्‌वाज
प्रा. अनुया दळवी
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
डॉ. दयानंद तिवारी
श्री अनुराग त्रिपाठी
श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी
श्री उमाकांत त्रिपाठी
प्रा. निशा बाहेकर
डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ. आशा मिश्रा
श्रीमती मंगला पवार
श्री नरसिंह तिवारी

प्रकाशक

विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी,
मुंबई - ४०००२५

संयोजन

डॉ. सौ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : सुहास जगताप
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, लीना माणकीकर, प्राजक्ता मोरे

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/15,000
मुद्रक : M/S. KING OF KINGS PRINTERS PVT. LTD., BHIWANDI

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्‌यक्रम प्रारूप -२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्‌यचर्या-२०१२' तैयार की गई है। पाठ्‌यपुस्तक मंडळ शैक्षणिक वर्ष २०१३-१४ से शासनमान्य पाठ्‌यचर्या पर आधारित हिंदी की पहली से आठवीं कक्षा तक हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक की नवीन शृंखला क्रमशः प्रकाशित कर रहा है। इस शृखंला में चौथी कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष हर्ष हो रहा है।

आकलन, निरीक्षण, भाषण-संभाषण के रूप में बच्चों की भाषाशिक्षा का अनौपचारिक शुभारंभ उनके परिसर और प्रसार माध्यमों द्‌वारा होता है। पाठशाला में आने के उपरांत उनकी औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ होता है। चौथी कक्षा के विद्‌यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए पाठ्‌यपुस्तक का आकार बड़ा और स्वरूप चित्रमय बनाया गया है। पुस्तक की संरचना करते समय इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो।

विद्‌यार्थियों की आयु, स्वाभाविक अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए उनकी भाषाशिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी हो इस हेतु पाठ्‌यपुस्तक में सहज गुनगुनाने योग्य गीतों, कविताओं का समावेश किया गया है। इसी प्रकार हास्य, चित्रकथा, चित्रवाचन और रंगीन चित्रों का सजगता से उपयोग किया गया है। पाठ्‌यपुस्तक में आए विषयों को खेल, कृति के रूप में समाविष्ट किया गया है। इन घटकों का अध्ययन-अध्यापन करते हुए शिक्षक इस तरह के अध्ययन-अनुभव को समाहित करें जिससे शाला-बाह्‌य जगत एवं दैनिक व्यवहार में सामंजस्य स्थापित हो सके।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' में पाठ्‌यपुस्तक की संरचना की पार्श्वभूमि पर विस्तृत चर्चा करते हुए पाठों के संदर्भ में आवश्यक सूचनाएँ प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं। अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित ही उपयोगी होंगी।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है। पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध विभागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है। समीक्षकों की सूचनाओं और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है।

'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों, भाषाविशेषज्ञ डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है। आशा है कि विद्‌यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २२ अप्रैल २०१४
चैत्र, कृष्ण अष्टमी, शके १९३६

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति : चौथी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएँ, ताकि उन्हें – • विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपनी पद्धति और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों । • 'पढ़ने का कोना'/पुस्तकालय में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री, समाचार पत्र आदि उपलब्ध हों । • तरह-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को पढ़कर समझने-समझाने, उस पर अपनी प्रतिक्रिया देने, बातचीत करने, प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध हों । • विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों । जैसे – किसी घटना या पात्र के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया, राय, तर्क देना, आदि । • कहानी, कविता आदि को बोलकर पढ़ने-सुनाने और सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपनी पद्धति से, अपनी भाषा में कहने और लिखने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के अवसर एवं प्रोत्साहन उपलब्ध हों । • जरूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका प्रयोग करने के अवसर उपलब्ध हों । • एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों । • अपनी बात को अपने ढंग से/सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित, सांकेतिक रूप से) करने की आजादी हो । • आसपास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे – मेरे घर की छत से सूरज क्यों नहीं दिखता ? सामने वाले पेड़ पर बैठने वाली चिड़ियाँ कहाँ चली गई ?) को लेकर प्रश्न करने, सहपाठियों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों । • कक्षा में अपने साथियों की भाषाओं पर गौर करने के अवसर हों । जैसे – आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी भाषा में कहे जाने के अवसर उपलब्ध हों । • विषयवस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों । • अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि । (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार प्रयोग करने के अवसर हों । • पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।	**विद्यार्थी –** 04.02.01 दूसरों द्‌वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं । 04.02.02 सुनी घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं । 04.02.03 कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं । 04.02.04 भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका प्रयोग करते हैं । 04.02.05 विविध प्रकार की सामग्री (जैसे – समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक को समझते और उन पर चर्चा करते हैं । 04.02.06 पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं । 04.02.07 अपनी पाठ्‌यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल साहित्य/समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं । 04.02.08 अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं । 04.02.09 पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की पुस्तक को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं । 04.02.10 पढ़ी रचनाओं के विषय, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी बात के लिए मत देते हैं । 04.02.11 फोल्डर के चित्र देखकर उनमें सहसंबंध स्थापित करते हुए कहानी बनाकर सुनाते हैं । 04.02.12 पंचमाक्षर युक्त तथा संयुक्ताक्षर युक्त शब्द बनाने की विधि से अलग-अलग शब्द बनाते हैं । 04.02.13 बोली भाषा का आदर करते हुए आकलन सहित वाचन करते हैं । 04.02.14 स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि । (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं । 04.02.15 भाषा की बारीकियों जैसे – शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, लिंग (जेंडर), वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं । 04.02.16 किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं ।

• पाठ्‌यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।	04.02.17 विभिन्न स्थितियों और उद्‌देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्‌ठी आदि) के अनुसार लिखते हैं । 04.02.18 स्वेच्छा से या शिक्षक द्‌वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्‌देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं । 04.02.19 अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में प्रयोग करते हैं । 04.02.20 विभिन्न उद्‌देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विरामचिह्‌नों जैसे – पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्‌न का सचेत प्रयोग करते हैं । 04.02.21 अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं ।

दो शब्द

यह पाठ्‌यपुस्तक विद्‌यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्‌यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु चार भागों में विभाजित करते हुए इसका 'सरल से कठिन' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्‌यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करनेवाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्‌यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्‌ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक गीत, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ -साथ चित्रवाचन, सुनो और गाओ, दोहराओ और बोलो, करो, अनुवाचन, पढ़ो, पढ़ो और लिखो, बताओ और कृति करो, आकलन, मौन-मुखर वाचन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । इनका सूचनानुसार सतत अभ्यास अनिवार्य है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' की पाठ्‌यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्‌यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्‌भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनसे विद्‌यार्थी सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है । अतः मानक हिंदी का विशेष अभ्यास आवश्यक है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्वों के विकास का अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्‌यसामग्री का मूल्यमापन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । अतः विद्‌यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन और व्यावहारिक सृजन का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्‌यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्‌यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
*	पौधघर	१
१.	पाठशाला	२,३
२.	प्रार्थना	४
३.	संगठन	६
४.	जायकवाड़ी बाँध	८
५.	आईना	१०
६.	चाँद और धरती	१२
७.	असम की बेटी	१४
८.	व्यायाम	१५
९.	समझदारी	१६
१०.	समानता	१८
*	पुनरावर्तन	२०

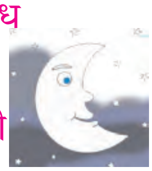

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	नृत्य	२२, २३
२.	सीख	२४
३.	घंटाकरण	२६
४.	ऐसे-ऐसे	२८
५.	पेटूराम	३०
६.	मिठाइयों का सम्मेलन	३२
७.	मेरे अपने	३४
८.	पतंग	३५
९.	मैं दीपक हूँ	३६
१०.	नकल	३८
*	पुनरावर्तन	४०

तीसरी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	बाजार	४२, ४३
२.	नींद हमें तब आती है	४४
३.	पुरखों की निशानी	४६
४.	स्वस्थ तन-स्वस्थ मन	४८
५.	मिलकर बनें	५०
६.	नई अंत्याक्षरी	५२
७.	क्या तुम जानते हो ?	५४
८.	नन्हीं जादूगरनी	५५
९.	सच्चा साथी नीम	५६
१०.	समुच्चित चित्रकला (कोलाज)	५८
११.	मीठे बोल	६०
*	पुनरावर्तन	६२

चौथी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	संचार के साधन	६४, ६५
२.	प्यारा भारत देश हमारा	६६
३.	तीन मूर्तियाँ	६८
४.	बचत	७०
५.	कठपुतली	७२
६.	आदमी और मशीन	७४
७.	बूझो तो जानें !	७६
८.	ज्ञान-विज्ञान	७७
९.	पृथ्वी	७८
१०.	छोटा परिवार	८०
११.	मार्ग	८२
*	पुनरावर्तन	८४
*	शब्दार्थ	८५

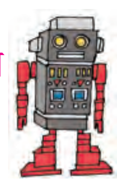

● पूर्वानुभव – पहचानो और बताओ :

❋ पौधघर

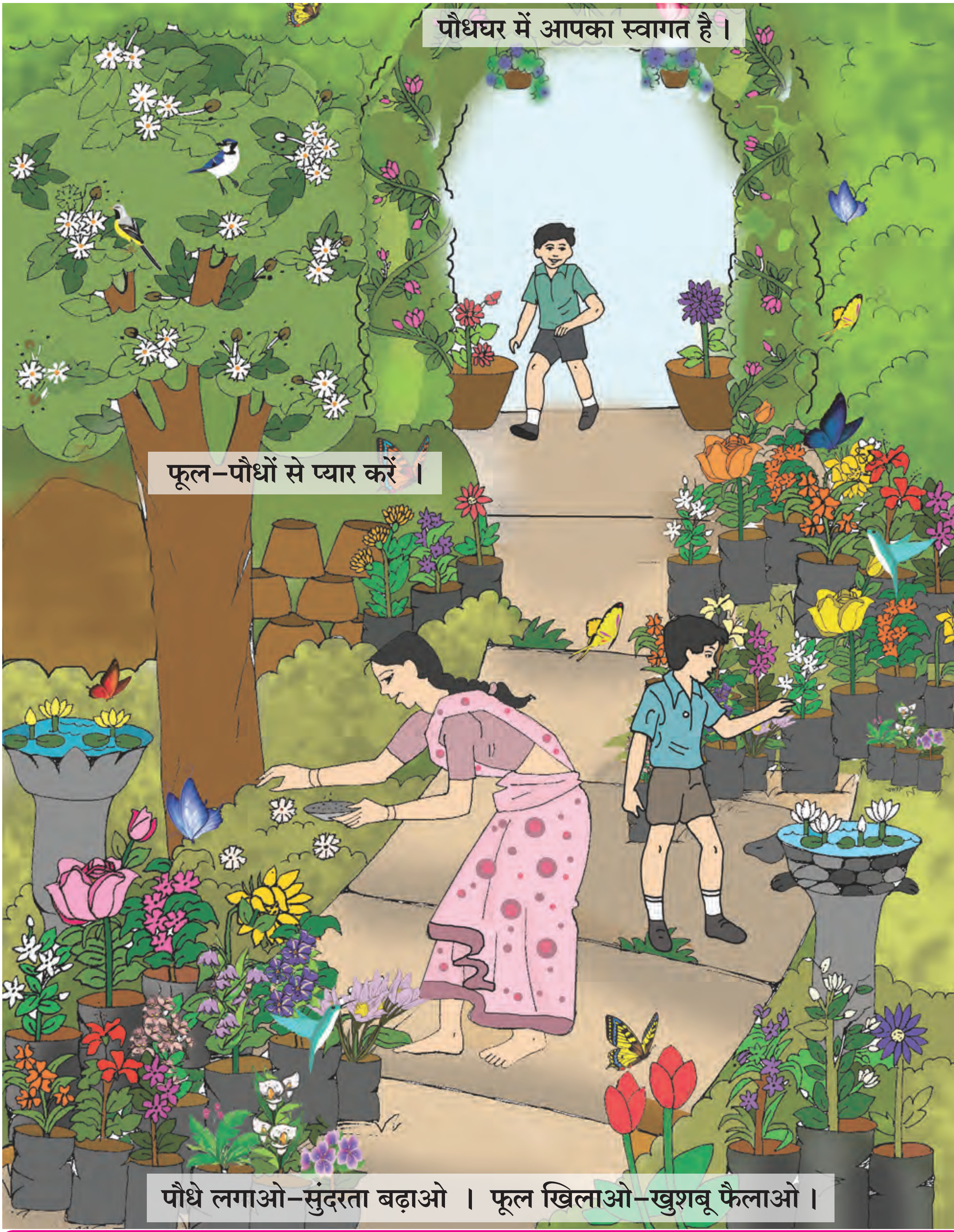

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनपर चर्चा करें । विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें और ऊपर आए वाक्यों पर प्रश्न पूछें । उन्हें किसी पौधघर में जाने और वहाँ के अपने अनुभव सुनाने के लिए कहें । फूलों के नामों और उनके रंगों की सूची बनवाएँ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. पाठशाला

जहाँ चलते उपक्रम, वही पाठशाला सर्वोत्तम।

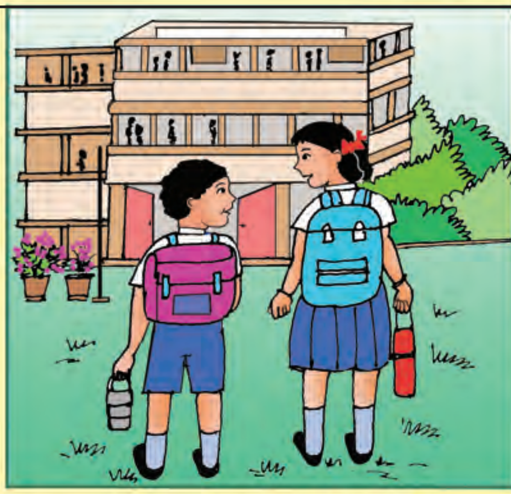

पाठशाला ज्ञान का मंदिर है ।

आदर्श पाठशाला, उत्तम पाठशाला ।

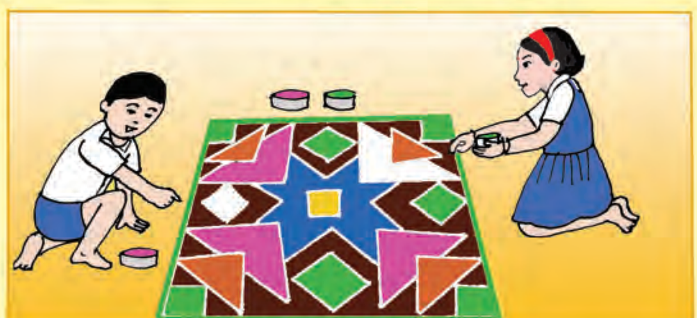

पाठशाला हमेशा स्वच्छ रखें ।

पाठशाला में सजावट की उजास ।
तन, मन, बुद्धि का हो विकास ।

❑ पाठशाला में क्या-क्या होना चाहिए, विद्यार्थियों से पूछें । विद्यार्थियों से उनकी पाठशाला के संबंध में दो-दो वाक्य कहलवाएँ । चित्र के वाक्यों को समझाएँ और उनपर चर्चा करें । उन्हें घर के किसी कार्यक्रम के बारे में पाठशाला में बोलने हेतु प्रेरित करें ।